माँ की ममता

(V. मोहम्द बद्रुद्दीन, U. P. C.)

आसमान पर यहाँ-वहाँ बादल छाए हुए थे। शीतल पवन धीमे धीमे चल रहा था। चांद एक छोटी-सी नैया जैसी बादलों को चीर कर आगे बढ रहा था। मै कमरे के अंदर बैठकर पढ रहा था। परीक्षा करीब थी, बार बार नजर खिड़की से बाहर जाकर चांदनी में अटक जाती थी। दस बज चुके थे। पलकें भारी थीं। कभी सोचता कि जाकर लेटूँ, लेकिन परीक्षा की परेशानियाँ तो खाये जा रही थीं। सारी दुनियाँ नींद की परी की गोद में मींठे स्वप्न ले रही थी। सिर्फ मैं जाग रहा था दूर से कुत्तों के भूंकने की आवाजें आ रही थीं।

मेरे कमरे के पास ही एक पुराना जीर्ण कच्चा मकान था जो वर्षों से खाली पडा था। वहाँ कभी मैने किसी मनुष्य की सूरत भी नहीं देखी थी। रात के समय वहाँ आकर कुछ गायें अवश्य आराम लिया करती थीं। उस रात एका एक जब मेरी नजर उस खाली मकान की तरफ पडी तो मैने देखा कि वहाँ आग जल रही है और एक औरत की मूर्ति उस प्रकाश में साफ दिखाई दे रही है। मुझे कुतूहल हुआ कि वह कौन होगी? कहाँ से आयी होगी? इस खाली मकान का पता उसे कैसे लगा होगा? फिर मैंने सोचा कि मुझे क्या करना है, कोई भी हो मेरी बला से। जाकर लेट रहा। पर नींद की परीने पास आने से इनकार कर दिया। मैं योंहीं करवटें बदल रहा था कि कानों में कुछ अजीब तरह से बडबडाने की सी आवाजें आने लगी—"आह! कैसी अजीब दुनियाँ है? इस दुनियाँ में दो-चार दिन भी ज़िंदा रहना मुश्किल हो गया है, मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? एक दो कौर अन्न के लिए किसी के दरवाजे पर जाती हूं तो लोग मुझे पागल कहकर दुत्कार देते हैं। मेरी तरफ इस तरह घूरते हैं मानों मैं मनुष्य न होकर कोई जानवर हूं। यह मेरा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या। मेरी जगह लोग जब किसी सुन्दर भिखारिन को देखते हैं कितनी उदारता दिखाते हैं, उसकी झोली भर देते है। हाय भगवान् तूने मेरा बेटा भी मुझ से छीन लिया है हे मेरे बेटा तू मुझे क्यों छोडकर चला गया? मैंने तुझपर कितना प्यार लुटाया था। तू कहाँ है? ऐ मेरे लाल तू आकर देख तो सही? तुझपर सब कुछ न्यौछावर करनेवाली तेरी प्यारी माँ आज राह की भिखारिन है, आश्रयहीन है, लोग उसे पागल कहकर उसका अपमान कर रहे हैं। आ जा मेरे लाल, एक बार आ जा। मैं आखिरी बार तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि अपनी मरती हुई माँ को अपना प्यारा मुखडा दिखा कर एक घटी के लिए तो सुख दे जा? आजा बेटा.....बेटा भानू.....बेटा भानू.....ऊ... ऊ.....ऊ.....?" फिर एक दम निस्तब्धता।

मैंने कभी अपनी माँ का मुहँ नहीं देखा था। माँ का प्यार मुझे पिताजी से ही मिला करता था उसके आखिरी वाक्य ने मेरे हृदय को हिला दिया। मेरी इच्छा हुई कि उसी दम वहाँ दौड़ पड़ूं और उस अज्ञात रमणी को, 'माँ' कहकर पुकारूँ। फिर भय भी हुआ कि यदि वह कोई स्त्री न होकर भूत-प्रेत हुई तो! जाऊँ या न जाऊँ इसी उधेड़बुन में कब मेरी आँखे लग गई कुछ भी मुझे पता नहीं। जब मेरी आँखें खुलीं। प्रातः साढे आठ बज चुके थे।

उठ बैठते ही मैने उस खाली मकान पर नज़रें दौडायीं, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। फिर भी मैं वहाँ दौड पडा। रात की घटना मेरे दिमाग में चक्कर काट रही थी। वहाँ जाकर, मैने देखा कि घर के एक कोने में चिथडों में लिपटी कोई चीज़ पडी है। उठा कर मैंने पोटली खोली तो उस में से एक सुन्दर बालक की तसवीर निकली। उम्र होगी कोई दस या ग्यारह वर्ष की। बड़ा सुंदर भोला-भाला मुखडा था उस बालक का। वस्त्रालंकार से लगता था कि वह किसी धनी-मानी का लडका होगा। तसवीर लेकर अपने घर आया और अपने निजी संग्रह में बहुमुल्य वस्तु समझने लगा।

दिन ढल गया था। सूरज दिन भर के परिताप के कारण लाल लाल आँखें दिखाकर अस्ताचल की ओर

बढ रहा था उसी समय मैंने देखा कि फटे पुराने चिथडों में लिपटी हुई कोई नारी उसी खाली मकान में दाखिल हुई सूखा चेहरा रूखे बाल। ऐसा लगता था कि वह लम्बे अरसें से बीमार रही है। उम्र होगी कोई तीस-पैंतीस वर्ष की। लेकिन रोग और चिंता के कारण बूढी सी दिखाई देती थी। आते ही वह घर में यहाँ वहाँ कुछ ढूँढने लगी थी। लेकिन बहुत ढूँढने पर भी उसकी अभीप्सित वस्तु नहीं मिली तो 'हाय राम' कहकर वह वहीं जमीन पर गिर पडी और बेटा भानू-भानू कहकर फूट फूट कर रोने लगी।

मैं बहुत देर तक देखता रहा लेकिन उसका रोना बंद नहीं हो रहा था। जब मुझ से रहा नहीं गया तो मैं उस तसवीर को लेकर उसके पास गया और पुकारा 'माँ'।

वह एक दम उछल पडी और मुझे खींचकर गले लगाया। वह बराबर कहती गयी कि मेरे बेटे तू अब तक कहा था, क्यों नहीं मेरे सामने आता था चल, घर चल, कितना दुबला हो गया है रे तू। अब कहीं नहीं जायगा न। मेरा दम घुट रहा था उसकी बाहों की कसावट के अंदर। तसवीर मेरे हाथ से गिर पडी। तसवीर पर नजर पडते ही वह मेरी ओर जलती हुई आँखों से देखने लगी। मैं घबरा गया। वह चीखने लगी "चोर उचक्के! कहीं के मेरे बेटे की तसवीर चुरा कर ले गया था क्यों आया था यहाँ" मैं बहुत कठिनाई से उसे समझा पाया कि मैं चोरी के लिए वहाँ नहीं गया था बल्कि उसके बारे में जानना चाहता था। जब उसे कुछ होश आया तो वह फिर अपने लडके का नाम ले लेकर रोने लग गयी और उस तसवीर उठाकर उसने छाती से लगा लिया। मुझसे माफी माँगते हुए कहने लगी मैं अपने बेटे के शोक में पागल हो गयी थी। मैंने आप को चोर कहा बुरा न मानना मैंने भी हमदर्दी के लहज़े में कहा नहीं माँ तुम्हें माफी माँगने की जरूरत नहीं। मैं खुद ही तुम्हारे दुख से दुखी हूँ। मैं तुम्हें भी अपनी माँ के समान ही समझता हूँ। अब यदि तुम अपने दुख की कहानी मुझसे कहो तो शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूँ।

तब उसने संक्षेप में बताया कि वह नासिक की रहने-वाली है। उसके पति एक इंजनीयर थे। घर में कोई कमी नहीं थी, खाते-पीते अच्छे सम्पन्न थे। भानु ही उनका एक मात्र पुत्र था। बडे लाड-प्यार से उन्होंने उसका लालन पालन किया था। बुरे संसर्ग में पड़कर वह घर छोडकर भाग गया है। जिसका पता अभी तक नहीं लग सका। पुत्र वियोग को सहन न कर सकने के कारण भानू के पिता भी हृदय स्तंभन से चल बसे। वह अकेली रह गयी थी। पुत्र और पति के वियोग में अकेली घर में रहना उसके लिए असाध्य होगया, और घर में जो कुछ रुपये थे लेकर वह अपने पुत्र को खोज ने निकल पडी। वम्बई, दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता आदि बडे बडे सब शहर उसने ढूँढ डाले, लेकिन कहीं भी उसका पता न लगा। हाथ की पूंजी सब निकल गयी। अनेक प्रकार के लोगों से पाला पड गया। अनेकों मुसीबतें झेलीं। आज उसे अपने पेट भरने के लिए भी भीख माँगनी पडती है। लोगों की बुरी नजरों से गुज़रना पडता है। उसके पास जो तसवीर है वह उसके उसी खोये हुए भानू की है।

यह कहानी सुनकर मेरा दिल सहानुभूति से फटा जा रहा था। मैंने वह तसवीर समाचार पत्रों में छपवाकर भानू से प्रार्थना की कि वह कहीं भी हो मेरे दिए पते पर आ जाय उसकी माँ सुचेता देवी बहुत बीमार हैं बचने की आशा भी कम ही आदि। कई दिन निकल गये वह नहीं आया। उसकी माँ पूछती रही कि बेटा चन्द्र मेरे बेटे का कुछ पता चला मैं भी उसे रोज तसल्ली देता रहा कि अभी तो कुछ नहीं लगा लेकिन जल्द ही वह आ जाएगा"।

इस तरह कोई पंद्रह दिन गुज़र गये होंगे एक दिन सबेरे जाकर मैंने देखा कि वह मकान पूर्ववत् खाली पडता था। आस पास कहीं भी उस स्त्री का कोई चिह्न बाकी नही था। मैंने कई रात और कई दिन उसकी प्रतीक्षा की, लेकिन वह फिर कभी न लौट कर आयी, शायद अपने पुत्र की खोज में और कहीं। चली गयी थीं जब जब मुझे उसकी याद आती है मेरा दिल क़चोट उठता है 'हाय माँ की ममता' मेरी भी माँ होती तो शायद मुझे भी इसी तरह प्यार करती।

वैज्ञानिक आविष्कार और समाज

(ए. एम. उण्णिकृष्णन, बी. कोम. III)

यह विज्ञान का युग है। आज की दुनियाँ पुराने जमाने से कितना विभिन्न है? पुराने जमाने में लोग जंगल में रहते थे, आज आसमान को छूनेवाले महलों और शहरों में रहते हैं। सब जगह बिजली की बत्तियाँ, कारखाने से मशीनों की आवाज! सब जगह गाडी, मोटोर कार, लारी आदि से नाक में दम कर दिया है। यह सब कैसे हुआ और कहाँ से आया? इसका परिचय पाने के लिए हमको विज्ञान की उन्नति का इतिहास जानना चाहिय। विज्ञान की उन्नति से समाज में कैस परिवर्तन हुआ और क्या हानि-लाभ हुआ?

वैज्ञानिग आविष्कारो में रेल गाडी, मोटोर गाडियाँ, हवाई जहाज, टेलिफोन, टेलिविषन, वयरलस, सिनेमा आदि मुख्य है। कारखानों में कई प्रकार की मशीनें देखते हैं। मनुष्य के यातायात की सुविधाएं उन सब के आविष्कार से बहुत बढ गया है। एक जगह से दूसरी जगह की दूर का अंतर भी कम अनुभव होता है। हम चाहे तो कुछ ही घंटों में हवाई-जहाज के द्वारा दिल्ली से लन्दन पहूँच सकते हैं। उन सब के आविष्कारों से देशों का वाणिज्य-व्यवसाय भी बढ़ा है और देशों को आपस में एकता और सहानुभूती भी बढ़ी है। बहुत दूर के लोगों से बातचीत करने के लिए हमारे पास टलिफोन है और एक जगह से दूसरी जगह समाचार पहुंचाने के लिऐ वयरलस भी है। सिनेमा मनुष्य को आनन्द देती है और व्यापारी लोग विज्ञापन करने के लिये उसका उपयोग करते है। सोचने पर हम देख सकते हैं कि इन चीज़ों ने एक प्रकार से फायदे भी पहुँचाये है और दूसरे प्रकार से समाज की उन्नति में बडी बाधा भी पहुँचायी है। इन सब के आविष्कार के फलस्वरूप बहुत से लोगों को तो काम मिला मगर उसके साथ उससे तिगुने चौगुने लोगों का पेशा नष्ट भी हुआ।

कारखाने में मशीनों के उपयोग से उत्पत्ति बढ़ गयी और माल की उपज अधिक हुई। हाथ की बनी चीजों का मूल्य अधिक होने से उनकी अवश्यकता भी कम रह गयी। इससे घरेलू उद्योग-धंधों की उन्नति पर बाधा पडी। उससे यह हुआ कि गरीबों के बीच में बेकारी बढ़ती गयी है और समाज में बड़ा परिवर्तन आ गया। वैज्ञानिक दवाईयों के आविर्भाव से मनुष्य बीमारियों से मुक्त होते हैं और आबादी साल-साल अधिक होती है। आबादी की बढ़ती के अनुपात से देश का उत्पादन नहीं बढ़ता। इसलिये समाज की हालत बिगड़ती है।

आधुनिक उद्योग की उन्नति भी विज्ञान की उन्नति से हुई है। इतिहास में हमने पढ़ा है कि यूरोप में "औद्योगिक विप्लव" नामका बड़ा आन्दोलन चला था जिससे वहाँ के समाज में बडा परिवर्तन हुआ। इसका कारण भी विज्ञान की तरक्की था। अब हमारे भारत जैसे बडे बडे देश उद्योगीकरण के लिये अपना सारा समय, पैसे और शक्ति खर्च करते हैं। इस उद्योगीकरण से क्या होता है? हमारे देश को एक प्रकार से उन्नति होती है, दूसरी तरफ देश की बेकारी बढ़ जाती है। उद्योगीकारण के साथ हमें घरेलू उद्योग-धंधों की उन्नति के लिये कोशिश करनी चाहिये।

हम देखते हैं कि अमेरिका, ब्रिटेन, रूस जैसे अमीर देश अपनी विज्ञानशाला सारे देश के नाश करनेवाले बम आदि के आविष्कार के लिये उपयोग करते है। समाज की उन्नति में यह एक बडी बाधा है। इसलिये हमारे भारत जैसे देश विज्ञान को विकास के लिये उपयोग करते हैं। उसके बिना अमेरिका आदि देश उपदेश करते हैं कि विज्ञान का अच्छे कार्यक्रम के लिए उपयोग करने से ही समाज और देश की उन्नति होती है। अगर विज्ञान का अच्छे कार्य के लिए न उपयोग करे तो समाज का अन्त भी उससे होता है। इस प्रकार वैज्ञानिक आविष्कार समाज की उन्नति के लिये आवश्यक है और वह समाज के नाश की तरफ भी इशारा करता है।